International Journal of Home Science 2018; 4(3): 208-210

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2018; 4(3): 208-210
© 2018 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 04-07-2018
Accepted: 05-08-2018

सीमा पाठक
श्री सत्य साई यूनिवर्सिटी आफ टेक्नोलाजी एण्ड मेडिकल साइंस सिहौर, मध्य प्रदेश, भारत ।

नीलमा कुँवर
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, राम कृष्ण धर्माथ फाउण्डेशन विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

Correspondence
सीमा पाठक
श्री सत्य साई यूनिवर्सिटी आफ टेक्नोलाजी एण्ड मेडिकल साइंस सिहौर, मध्य प्रदेश, भारत ।

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के किशोर एवं किशोरियों में सामाजिक परिपक्वता व उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

सीमा पाठक, नीलमा कुँवर

सारांश
किशोरावस्था बालक के विकास का वह मंच है जिसमें बालक समाज में परिपक्वता की ओर बढ़ता है। समाज के लोगों के साथ समायोजन करता है तथा उसे इसमें कई समस्यायें भी आती हैं और उससे हमारा समाज यह उम्मीद करता है कि वह सामाजिक रूप से जिम्मेदार, व्यवहार कुशल, बौद्धिक कौशल और समाज में एक नागरिक की क्षमताओं को धारण करने के अनुरूप विकसित हो चुका है तथा वह अपनी आयु के अनुरूप समाज के लोगों के साथ परिपक्व सम्बन्ध स्थापित करके पूर्णरूप से किशोर बनकर समाज के लिए तैयार हो चुका है। इस प्रकार समाज उसमें सामाजिक परिपक्वता तथा सामाजिक वातावरण में समायोजन करने की अनुमति देता है जो सामाजिक परिस्थितियों को प्रभावित करने और सामाजिक व्यवहार तथा सामाजिक रीति रिवाजों के अनुसार किशोरों को विकसित करने में सहायता प्रदान करता है। इसलिए किशोरों को समाज के अनुरूप तथा समाज द्वारा स्वीकार किए जाने और सामाजिक परिपक्वता को लाने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करना होगा तथा पपिक्वता के सबूत देने होंगे।

कूट शब्दः जनजाति, सामाजिक परिपक्वता, उपलब्धि अभिप्रेरणा

प्रस्तावना
किशोरावस्था विकास की वह अवस्था है जिसमें सभी प्रकार के परिवर्तन परिपक्वता की ओर अग्रेसित होते हैं। वास्तव में यह अवस्था व्यक्ति के निर्माण की अवस्था होती है। बालक के प्रौढ़ जीवन की रूपरेखा इसी अवस्था में बनकर तैयार हो जाती है। इस अवस्था में सभी प्रकार के परिवर्तन अधिक वेग के कारण व्यक्तित्व का सारा स्वरूप ही एकदम नया फ्लेवर लेने लगता है। शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक तथा अत्याधिक सभी दृष्टि से व्यक्ति किशोरावस्था में नयापन आ जाता है। सामाजिक परिपक्वता का अर्थ है, समाज के मूल्यों, नियमों, अभिवृत्तियों, सामाजिक व्यवहार और सामाजिक भूमिका में परिपक्वता प्राप्त करना। उपरोक्त गुण किसी किशोर में समाज की प्रत्याशाओं के अनुसार विकसित हुए हैं तो वह किशोर समाज की दृष्टि में पूर्णरूपेण सामाजिक रूप से परिपक्व माना जायेगा। सामाजिक परिपक्वता के कारण वह किशोर समाजिक मूल्यों, नियमों और भूमिका आदि में निष्ठा ही नहीं रखता है बल्कि वह इन्हीं के आधार पर समूह में व्यवहार करता है। ऐसे किशोर सामाजिक गतिविधियों में रूचि लेते हुए सन्तोष व प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। अध्ययनों में देखा गया है कि बहिर्मुखी किशोरों में सामाजिक परिपक्वता अन्तर्मुखी किशोर की अपेक्षा ज्यादा पायी जाती है।

अध्ययन के उद्देश्य
1. अनुसूचित जनजाति के किशोरों एवं किशोरियों में सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
2. अनुसूचित जनजाति के किशोरों एवं किशोरियों में उपलब्ध अभिप्रेरणा का अध्ययन करना।

अध्ययन पद्धति
उक्त शोध कार्य हेतु उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिला में स्थित शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों का चयन किया गया है। इन विद्यालयों में अध्ययनरत 75 किशोर एवं 75 किशोरियां अनुसूचित जाति से एवं 75 किशोर एवं 75 किशोरियां अनुसूचित जनजाति से चुनी गयीं इस प्रकार कुल 300 अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति छात्र/छात्राओं पर यह अध्ययन किया गया है। सही आँकड़े प्राप्त करने के लिए सामाजिक परिपक्वता मापनी, उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण तथा छात्र अध्ययन व्यवहार मापनी का उपयोग किया गया है। सांख्यिकी विधियों – माध्य, मानक विचलन, काई वर्ग का उपयोग किया गया है।

परिणाम

सारिणी–1(अ): अनुसूचित जनजाति के किशोरों की विभिन्न मासिक आय की उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक परिणाम

मासिक आय की श्रेणी	संख्या	माध्य	मानक विचलन
उच्च	32	35.44	27.921
मध्यम	37	29.16	22.144
निम्न	81	31.05	23.378

प्रसरण विश्लेषण तालिका

चर	प्रसरण विश्लेषण	वर्गो का भाग	स्वातंत्रय कोटी	माध्य वर्ग योग	''एफ'' का मान	''पी'' का मान
उपलब्धि अभिप्रेरणा	समूहों के अन्तर्गत प्रसरण	714.736	2	357.368	0.614	>0.05
	समूहो के मध्य प्रसरण	85544.704	147	581.937		

स्वतंत्रता के अंश – 2.147
0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 3.00
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 3.69

तालिका 1(ब): अनुसूचित जनजाति के विभिन्न मासिक आय के किशोरियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक परिणाम

मासिक आय की श्रेणी	संख्या	माध्य	मानक विचलन
उच्च	32	21.06	15.272
मध्यम	37	22.49	16.020
निम्न	81	19.88	13.130

प्रसरण विश्लेषण तालिका

चर	प्रसरण विश्लेषण	वर्गो का भाग	स्वातंत्रय कोटी	माध्य वर्ग योग	''एफ'' का मान	''पी'' का मान
उपलब्धि अभिप्रेरणा	समूहों के अन्तर्गत प्रसरण	176.410	2	88.205	0.428	>0.05
	समूहो के मध्य प्रसरण	30261.884	147	205.863		

स्वतंत्रता के अंश – 2.147
0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 3.00
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 3.69

निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि मासिक आय का किशोर एवं किशोरियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। क्योंकि अनुसूचित जाति के किशोर एवं किशोरियों के माता–पिता की आय बहुत अच्छी नहीं होती है जिसका प्रभाव सीधे उनकी उपलब्धि पर पड़ता है। अतः निश्कर्श स्वरूप कहा जा सकता है कि मासिक आय के अनुसूचित जनजाति के किशोर एवं किशोरियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

सारिणी–2(अ): अनुसूचित जनजाति के किशोरों के कुल उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक परिणाम

	स्कूल	संख्या	माध्य	मानक विचलन	''जेड'' का मान	''पी'' का मान
कुल उपलब्धि अभिप्रेरणा	शासकीय	53	97.00	2.410	–0.937	>0.05
	अशासकीय	22	97.68	3.045		

स्वतंत्रता के अंश – 73
0.05 तर पर सार्थकता हेतु मान – 0.0199
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 0.0040

तालिका 2(ब): अनुसूचित जनजाति के किशोरियों के कुल उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक परिणाम

	स्कूल	संख्या	माध्य	मानक विचलन	''जेड'' का मान	''पी'' का मान
कुल उपलब्धि अभिप्रेरणा	शासकीय	55	98.56	3.326	1.195	<0.05*
	अशासकीय	20	100.20	4.384		

स्वतंत्रता के अंश – 73
0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 0.0199
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 0.0040

निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि अनुसूचित जनजाति के किशोर एवं किशोरियों के कुल उपलब्धि अभिप्रेरणा पर प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि किशोरों के अनुसूचित जनजाति के किशोरियों के सामाजिक उपलब्धि के लिए उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं किशोरियों के अनुसूचित जनजाति के किशोरों के कुल उपलब्धि अभिप्रेरणा पर प्रभाव पड़ता है।

सुझाव

1. उपलब्धि प्रेरणा का विकास सबसे महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक चरों में से एक है जो अन्य चरों की तुलना में जिम्मेदार है। अकादमिक उपलब्धि के स्तर को निर्धारित करने में स्वयं

अवधारणा उपलब्धि प्रेरणा है। वर्तमान अध्ययन से यह पाया गया है कि उपलब्धि अकादमिक उपलब्धि के साथ एक सकारात्मक सम्बन्ध है। इसलिए छात्रों की अकादमिक उपलब्धि को बढ़ाने के लिए उनकी उपलब्धि प्रेरणा विकसित करना आवश्यक है इसलिए घर और स्कूल में स्थितियों को छात्र की उपलब्धि को बढ़ावा देना चाहिए।

2. प्रत्येक परिवार का सामाजिक–आर्थिक स्तर भिन्न–भिन्न होता है, इसलिए प्रत्येक परिवार में बच्चों का लालन–पालन अलग–अलग प्रकार से होता है। परिवार की परिस्थितियों को देखते हुए किशोरों को उसके अनुरूप अपने लिए उपयुक्त अवसरों का चयन करना चाहिए, जिससे कि उनके व्यक्तित्व का विकास उत्तम तरीके से हो सके।
3. किशोर–किशोरियों को अपना लक्ष्य आकांक्षा स्तर पर अपनी बुद्धि तथा मानसिक स्तर के अनुरूप ही बनाना चाहिए जिससे उनमें हताशा या कुण्ठा उत्पन्न न हो।

संदर्भ

1. Bajwa HS, Virk Navneet. Academic achievement in relation to personality, stress and well-being, miracle of teaching. 2006; IV(1):17-20.
2. Chaudhary P, Madhuri. Social maturity adolescence in relation to their gender and terrain: A Comparative analysis for Humanity Science and English Language, for Scholar Research Magazine. 2013; 1(6):928-933.